गुरू बालकदास जी के 149 वीं बलिदान दिवस
एवं
गुरू वंदना की पंचम वर्षगांठ

के अवसर पर

सतनाम का पुर्नगारण एवं पुर्नस्थापना की दिशा में

द्विचरणीय कार्यक्रम

प्रथम चरण ः

गुरू बालकदास जी का बलिदान ब्यर्थ नहीं जायेगा ।

दिनॉक 27 मार्च 2009 को एक दिवसीय मोटर सायकल

संकल्प रैली

दिनॉक 27 मार्च 2009 . दिन शुक्रवार

संकल्प रैली प्रारंभ ः सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई (प्रातः 9 बजे) → रिसाली सेक्टर → उमरपोटी → उतई → डुमरडीह → छोटे मंहका → पंहडोर → करसा → छोटे औरी / बडे औरी → भाठागांव → अमलीडीह → मोतीपुर → खम्हरिया → पहंदा → परसदा → कुम्हारी (दोपहर 2 बजे भोजन) → चोरहा → मुर्रा → ढाबा → कंडरका → मुरमुंदा → चटवा → मोहंदी → खेरधा → जामुल → कुरूद → कोहका → कृष्णा नगर → सुपेला → सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई में रैली का समापन

उक्त स्थानों के बीच में आने वाले सतनाम धाम, सतनाम भवनों में गुरू वदना के साथ ही साथ संकल्प एवं उद्देश्य पर चर्चा एवं बलिदान दिवस से संबंधित पाम्पलेट का वितरण ।

द्वितीय चरण ः

सामाजिक परिचर्चा

विषय ः वर्तमान परिवेश में सतनाम धर्म की प्रासंगिकता ।
Relevancy of SATNAM DHARMA in the present scenario .

स्थान ः सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई

दिनॉक ः 28 मार्च 2009 , दिन शनिवार , समय दोपहर 1 बजे से संध्या 7 बजे तक

मुख्य अतिथि ः प्रो, हरिश्चंद जोशी जी सेवा निवृत प्रोफेसर नई दिल्ली

अध्यक्षता ः श्री जैज लाल राय जी अध्यक्ष गुरू घासीदास सेवा समिति भिलाई नगर

प्रमुख वक्ता ः श्री टी आर खुंटे जी सेवा निवृत, अतिरिक्त महाप्रबंधक , एन टी पी सी नई दिल्ली

विशेष अतिथि गण ः श्री के आर जनार्दन , जिला आबकारी अधिकारी ,
ः श्री एस एल जांगडे सहायक श्रमायुक्त ,
ः श्री टी आर कोसरिया , उप महाप्रबंधक , भिलाई इस्पात संयंत्र ,
ः डॉ जे आर सोनी ज्वाइंट डायरेक्टर , नगरीय प्रशासन निकाय, रायपुर बस्तर संभाग
ः श्री एल एल कोशले उप प्रमुख अभियंता एस ई सी एल कोरबा ,
ः श्री घना राम ढींढे , राष्ट्रीय अध्यक्ष, सत्य दर्शन सस्थान ,
ः डॉ आई आर सोनवानी , प्राध्यापक , शास दिग्विजय कालेज, राजनांदगॉंव ,
ः डॉ आर पी टंडन, प्रोफेसर कांकेर

संकल्प रैली में भाग लेने वालों को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा । रात्रि में गुरू भंडारा एवं गुरू बालकदास जी के बलिदान से संबंधित प्रस्तुति ।

आदरणीय संत जनों .

जय सतनाम

आज हमें मानव समाज को सत का रास्ता दिखाने वाले संत, महात्माओं व समाज के कर्मठ विभूतियों को याद करने की जरूरत है। जिसके प्रयास से आज समाज का अस्तित्व नजर आता है। बाबा गुरू घासीदास 18 दिसम्बर 1756 में गिरौदपुरी में जन्म लिये। उन्होंने तत्कालिन सामाजिक परिवेश पर गहन चिंतन मनन कर सतनाम रूपी विचार क्रान्ति की शुरूवात किये, जो समता स्वतंत्रता, बंधुत्व व न्याय का संदेश दिये। उनका सन् 1820 से 1830 तक का बौद्धिक क्रान्ति काफी कारगार सिद्ध हुआ । सन 1825 में अंग्रेजों द्वारा सभी वर्गो एवं समुदाय के लिये शिक्षा का द्वार खोलना, सन् 1828 - 1829 में उनके सुपुत्र गुरू बालकदास जी को अंग्रेजों द्वारा राज की पदवी से नवाजा जाना तथा 362 सतनामी मालगुजारों का पुनः स्थापित होना उनकी बौद्धिक क्रान्ति का ही असर है। उनके सुपुत्र गुरू बालकदास जी ने सतनाम रूपी पौधा को आगे विकसित करने का प्रयास किये जिसके परिणाम स्वरूप आज सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ व देश के कोने- कोने में करोड़ों की संख्या में सतनामी समाज गर्व से अपना सतनाम का परचम फैला रहा है।

आपने सतनाम सेना व रावटी के माध्यम से समाज में राजमहंत, महंत, भंडारी, साटीदार परंपरा स्थापित करते हुए, समाज को संगठित कर अनुशासित पद्धति से कार्यक्रम शुरू किये। इतना ही नहीं पंथी, चौका आदि प्रचार- प्रसार के माध्यम को भी विकसित कर सतनाम संस्कृति का उद्बोध किया। महिलाओं की दुर्दशा पर विशेष ध्यान दिया। मूक समाज में शिक्षा की आवश्यकता के साथ सती प्रथा को बंद कराकर विधवा विवाह को प्रोत्साहित किया। यह सामाजिक क्रान्ति का रफ्तार अमानवीय सांप्रदायिक तत्वों से सहा नहीं गया और षडयंत्र पूर्वक 28 मार्च 1860 को सवर्णो द्वारा सतनाम के प्रवर्तक, प्रणेता, अग्रणी राजागुरू बालकादास को धोखे से औराबांधा (मुंगेली)के पास निर्मम हत्या कर दी गई। आपका बलिदान खाली नहीं जायेगा कोटि- कोटि नमन आपको। उनके अंग रक्षक शहीद सरहा व जोधाई को समाज कभी भूल नहीं सकता, जिन्होंने गुरू बालकदास जी के रक्षा के प्रयास में अपनी जीवन की भी परवाह नहीं किये। शहीदों को शत शत प्रणाम।

स्व. नकुलदेव ढीढी जी का समाज हमेशा आभारी रहेगा जिन्होंने सर्व प्रथम 18 दिसम्बर सन् 1938 में अपने ग्राम भोरिंग (महासमुंद) में गुरू घासीदास जी की जन्म तिथि 18 दिसम्बर सन् 1756 प्रमाणिकता के आधार पर निर्धारित कर जयंती की शुरूवात किये। इतना ही नहीं आज तीन दिवसीय गिरौदपुरी मेला (फागुन शुक्ल पंचमी . छठमी व सप्तमीं) उन्हीं की ही देन है, जिसे उन्होंने सन् 1961 में प्रारंभ किये ।

आज सतनामी समाज गुरू घासीदास जयंती व गिरौदपुरी के मेला के माध्यम से संगठित नजर आता है, जिसका एहसास समाज के साथ साथ शासन प्रशासन को भी है। इस संगठित समाज में समाज की मान सम्मान की रक्षा के लिये त्याग पैदा करने की आवश्यकता है और यह सब गुरू बालकदास जी की बलिदान से प्रेरणा के बिना असंभव सा है।

इसी प्रयास में पिछले पांच वर्षो से भिलाई सतनामी समाज द्वारा सतनामी समाज के अन्य जगहों के सामाजिक बंधुओं के सहयोग से प्रत्येक सोमवार को शाम 6.30 बजे विभिन्न सतनाम भवनों सतनाम धामों में गुरू वंदना की परंपरा शुरू हुआ, जिसका विस्तार आज भिलाई के अलावा छत्तीसगढ के लगभग सभी 18 जिलों में नजर आ रही है। गुरू वंदना आज समाज की जरूरत व चाहत महसूस होने लगी है। विगत 18 फरवरी सन् 2008 से सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई में गुरू वंदना के अवसर पर आयोजित " टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " के मध्यम से समाज के अनुभवी लोगों के अनुभव को बांटने का एक सार्थक प्रयास जारी है। स्व.नकुलदेव ढीढी जी के प्रयास से 18 दिसम्बर गुरू घासीदास जयंती एवं गिरौद मेला की तिथि समाज में रेखांकित हो चुकी है। इसी कड़ी में 28 मार्च गुरू बालकदास जी का बलिदान दिवस का समाज में रेखांकित होना, समाज में त्याग व बलिदान की प्रेरणा के लिये आवश्यक है। गुरू वंदना का वर्षगांठ का आयोजन, गुरू बालकदास दिवस 28 मार्च के साथ साथ संपन्न करने की प्रक्रिया भी 28 मार्च को रेखांकित करने का प्रयास है। आओ हम सब मिलकर उन महान बिभूतियों को श्रद्धा सुमन अर्पित करें जिन्होंने सतनाम और सतनामियों को गर्व से शिर उठाकर चलने का रास्ता दिखाया।

आने वाले समय में समाज 18 दिसम्बर गुरू पर्व (गुरू घासीदास जन्मोत्सव) के बाद अब 28 मार्च बलिदान दिवस (गुरू बालकदास पुण्य तिथी) की महत्ता को अवश्य स्वीकार करेगा।

गुरू बालकदास जी के सदेश को जन जन तक पहुँचाने हेतु 27 मार्च को मोटर सायकल संकल्प रैली व 28 मार्च को " वर्तमान परिवेश में सतनाम धर्म की प्रासंगिकता " विषय पर सामाजिक परिचर्चा का आयोजन किया गया है। कृपया इस कार्यक्रम में तन, मन, धन से सहयोग देकर समाज में त्याग व बलिदान की लहर पैदा करने में सहयोग दें। इस अवसर पर गुरू वदना (तृतीय, चतुर्थ व पंचम वर्षगांठ) को समर्पित स्वागत पत्रिका का भी विमोचन किया जायेगा ।

भवदीय

गुरूबालकदास बलिदान दिवस एवं गुरू वंदना वर्षगांठ आयोजन समिति भिलाई नगर (वर्ष 2009)

कार्यक्रम सहयोग ः गुरू घासीदास सेवा समिति भिलाई नगर का विशेष सहयोग के अलावा समस्त सामाजिक कार्यकर्ता गण एवं समस्त सामाजिक संगठन ।